आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांकः-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2549 • उदयपुर, शुक्रवार 17 दिसम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

राजश्री का जीवन हुआ आसान

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के निकटस्थ गांव नारियल खेड़ा निवासी राजश्री ठाकरे (21) का जन्म से ही दांया हाथ बिना पंजे के था।

पिता दशरथ ठाकरे मजदूरी करके पांच सदस्यों के परिवार का पोषण कर रहे थे। सितम्बर 2019 में पिता का देहांत हो गया। जीवन संकट में आ गया।

राजश्री ने एक कॉलेज से ग्रेजुएशन की डिग्री हासिल की। कृत्रिम पंजा अथवा हाथ लगाने के लिए भोपाल के एक बड़े अस्पताल से सम्पर्क भी किया लेकिन आर्थिक तंगी के चलते सम्भव नहीं हो पाया। राजश्री पार्ट टाइम नौकरी कर परिवार पोषण में मदद कर रही है।

भोपाल में 22 जनवरी 2021 को नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क कृत्रिम अंग शिविर में राजश्री ने भी पंजीयन करवाया। जहां संस्थान के ऑर्थोटिस्ट–प्रोस्थोटिस्ट ने इनके लिए पंजे सहित एक विशेष कृत्रिम हाथ तैयार किया। राजश्री इस हाथ से अब दैनन्दिन कार्य के साथ लिखने का काम भी आसानी से कर लेती है।

निशा को मिला नया सवेरा

बेतिया (बिहार) की रहने वाली निशा कुमारी (15) का बांया पैर जन्म से ही विकृत अर्थात् छोटा था। पैरों के इस असंतुलन को देख पिता चान्देश्वर शाह व माता चंदादेवी सहित पूरा परिवार चिंतित रहा। किसी ने बताया कि थोड़ी बड़ी होने पर बच्ची का पांव स्वतः ठीक हो जाएगा, लेकिन ऐसा न होने पर माता–पिता की चिंता और अधिक बढ़ गई। अस्पताल में दिखाने पर ऑपरेशन का काफी खर्च बताया। जो इनकी गरीबी के चलते नामुमकिन था।

पिता बाजार में सब्जी का विक्रय करते हैं, एवं माता–पिता खेतीहर मजदूर हैं। निशा के दो भाई और और दो बहनें हैं। कुल मिलाकर परिवार में सात सदस्य हैं, जिनका पोषण माता–पिता की कमाई से बामुश्किल हो पाता है। कुछ ही समय पूर्व दिल्ली में रहने वाले इनके करीबी रिश्तेदार भूषण शाह ने टीवी पर नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क पोलियो सुधार ऑपरेशन एवं कृत्रिम अंग वितरण के बारे में कार्यक्रम देखा तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने तत्काल निशा के पिता को सूचित किया।

बिना समय गंवाए संस्थान चान्देश्वर और उनके साढू वासुदेव शाह जुलाई के पहले सप्ताह में ही निशा को लेकर उदयपुर संस्थान मुख्यालय पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उसकी जांच कर 'एक्सटेंशन प्रोस्थेटिक' (कृत्रिम अंग) लगाया। इसके लगने से निशा के दोनों पांवों में संतुलन है और वह बिना सहारे चल सकती है। निशा के भविष्य के प्रति चिंतित पूरा परिवार अब प्रसन्न है।

दिव्यांगों के जीवन को सरल और सुचारु बनाएं

शारीरिक दृष्टि से अक्षम (दिव्यांग) व्यक्तियों के पुर्नवास एवं विकास को लेकर प्रतिवर्ष 3 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकलांग दिवस मनाया जाता है। इसकी शुरूआत 1992 से संयुक्त राष्ट्र संघ की पहल पर हुई थी। भारत के प्रधानमंत्री ने इसे दिव्यांग दिवस का सम्बोधन प्रदान किया। इसका उद्देश्य दिव्यांगों के जीवन को बेहतर और स्वावलंबी बनाना है।

पूरी दुनिया के 15 प्रतिशत लोग विकलांगता से ग्रस्त है। जिन्हें रोजमर्रा की जिंदगी में अनेक कठिनाइयों का सामना करना और इनके समग्र विकास के साथ इनके अधिकारों की रक्षा करना है। निःशक्तजन से भेदभाव करने पर दो साल तक की कैद और अधिकतम 5 लाख रुपए के जुर्माने का प्रावधान किया गया है। जहां तक भारत का सवाल है यहां की आबादी का 2.2 प्रतिशत हिस्सा दिव्यांग है। भारत सरकार ने इनके विकास के लिए सरकारी नौकरियों व अन्य संस्थानों में 3 प्रतिशत आरक्षण के प्रावधान को बढ़ाकर 4 प्रतिशत कर दिया है। दिव्यांग शारीरिक दृष्टि से भले ही अक्षम हो लेकिन उनमें कुदरत कुछ ऐसी प्रतिभा का रोपण कर देती है जिससे वे दुनियाभर में अपने कौशल का योगदान सुनिश्चित कर प्रतिष्ठा अर्जित करते हैं। ऐसे कुछ व्यक्तियों में गायक और संगीतकार रवीन्द्र जैन, नृत्यांगना सोनल मानसिंह, नृत्यांगना सुधाचंद्रन, पहली एवरेस्ट विजेता दिव्यांग महिला अरुणिमा सिन्हा, क्रिकेटर एस चंद्रशेखर, पैरालिपिक स्वर्ण विजेता अवनि लेखरा, रजत पदक विजेता देवेन्द्र झाझड़िया, दीप मलिक का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इन्होंने अपने आपको सिद्ध किया है। ऐसी अनेक और भी जानी मानी हस्तियां हैं, जिन्होंने अपनी दिव्यांगता को व्यक्तित्व निर्माण में आड़े नहीं आने दिया।

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान भी आपके सहयोग और दिव्यांगों की निःशुल्क सेवा, चिकित्सा, शिक्षण–प्रशिक्षण एवं पुनर्वास के क्षेत्र में पूरे समर्पण के साथ संलग्न है। विकलांगता दिवस पर हमें इस बात की शपथ लेनी है कि दिव्यांगों बंधु–बहनों के जीवन को सरल और सुचारू बनाने में हम अपनी सामर्थ्य के साथ अपना योगदान सुनिश्चित करेंगे।

हटा राह का रोड़ा

रेल से कटे दोनों पांव, नारायण सेवा ने फिर चला दिया

कोरबा (छत्तीसगढ़) जिले के गांव केराकछार निवासी लम्बोहर कुमार एक बोरवेल कंपनी में काम करते हुए अपने परिवार के साथ खुश थे कि एकाएक जिंदगी की राह में रोड़ा खड़ा हो गया। वे अपने साथ घटी पूरी घटना का जिक्र करते हुए बताते हैं कि किसी काम से वे गांव से बिलासपुर जा रहे थे। रेलवे स्टेशन पर पटरी पार करते समय गिर पड़े और अचानक आई ट्रेन ने उनके दोनों पांव छीन लिए।

घटना ने परिवार को गहरे संकट में डाल दिया। इलाज में पैसा खर्च हो गया और काम–धंधा छोड़कर घर बैठना पड़ा। कुछ समय बीतने पर उनके एक मित्र पप्पू कुमार ने बताया कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान निःशुल्क कृत्रिम पैर लगाती है।

इस समाचार से उम्मीद की किरण दिखाई दी। वे पिता तीजराम के साथ उदयपुर पहुंचे। जहां उनके दोनों कटे पांव का नाप लेकर कृत्रिम पैर बनाए गए। वे कहते हैं अब मैं उन पैरों के सहारे आराम से चलता हूं और आजीविका से जुड़कर परिवार के पोषण में मदद भी कर रहा हूँ। नारायण सेवा संस्थान का बहुत–बहुत आभार।

अहंकार की गति

एक मूर्तिकार उच्च कोटि की ऐसी मूर्तियां बनाता था, जो एकदम सजीव लगती थी। हर जगह उसकी कला की प्रशंसा होती और पुरस्कार मिलते। इससे मूर्तिकार को अंहकार हो गया कि उसके समान और कोई मूर्तियां नहीं बना सकता। एक दिन उसके घर एक महात्मा आए जिन्होंने उसे बताया कि और भी कोई श्रेष्ठ मूर्ति तुम बना सकते हो तो दो दिन में बना लो क्योंकि तीसरे दिन किसी भी क्षण तुम्हारी मृत्यु हो सकती है। मृत्यु की बात सुन वह परेशानी में पड़ गया। वह मरना नहीं चाहता था। उसने दो दिन में एक जैसी सुन्दरतम 10 पुरुष मूर्तियां बनाई,जो जीवंत लगती थी। तीसरे दिन वह स्वयं उन मूर्तियों के बीच बैठ गया। यमदूत जब उसे लेने आए तो एक जैसी आकृतियों को देखकर स्तम्भित रह गए। उन्हें ये तो पता था कि एक महात्मा ने मूर्तिकार को उसकी मृत्यु का संदेश पहले ही दे दिया है। उन्हें यह आभास हो गया कि इन्हीं मूर्तियों में कहीं न कहीं मृत्यु से बचने के लिए मूर्तिकार छिपा बैठा है लेकिन सभी 11 आकृतियां एक जैसी थी। उनमें मूर्तिकार कौनसा है? यह पता लगाना यमदूतों के लिए मुश्किल हो गया। वे सोचने लगे कि अब क्या किया जाए? मूर्तिकार के प्राण अगर न ले सके तो सृष्टि का नियम टूट जाएगा और सत्य परखने के लिए मूर्तियां तोड़ी गई तो कला का अपमान होगा। अचानक एक यमदूत को मानव स्वभाव के सबसे बड़े दुर्गुण 'अहंकार' की स्मृति आ गई। उसने चतुराई से काम लेते हुए दूसरे यमदूत से कहा, 'मूर्तियां तो बड़ी सुन्दर बनी हैं, लेकिन इन्हें बनाने वाला यदि मुझे मिल जाता तो मैं उसे मूर्तियों की बनावट में रह गई भारी त्रुटि बताकर सुधार करवा देता।'

यह सुनते ही मूर्तिकार का अहंकार जाग उठा कि मेरी कला में कमी रह ही नहीं सकती। मैंने पूरा जीवन इस कला को समर्पित किया है। प्रशंसा और पुरस्कार प्राप्त किए हैं। यह सोचने के साथ ही वह बोल उठा, 'कैसी त्रुटि?' यमदूत ने झट से उसका हाथ पकड़ लिया और बोला, 'बस यही त्रुटि कर गए तुम अपने अहंकार में।' क्या नहीं जानते कि बेजान मूर्तियां कभी बोला नहीं करती। यह प्रसंग बताता है कि व्यक्ति को अहंकार से सदा दूर रहना चाहिए।

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

आज का युग, अच्छा युग होना चाहिये। आपके हाथ में मोबाईल जैसा बड़ा विज्ञान आ गया। और आपके करकमलों में ये सीम आ गयी। जिसमें एक सीम में माईक्रोचिप में हजारों मेमोरिया भरी हुई है। बहुत सारे प्रोग्राम पड़े हुए हैं। इतना होने के बाद भी वो ही राग, वो ही द्वेष, वो ही ईर्ष्या।

किन्हीं को नोबल पुरस्कार मिला था, नोबल पुरस्कार। वो मिला था कि एक सैकण्ड के कितनेवे अंष में हमारा परमाणु टूट जाता है। एक कोषिका टूट जाती है। परमाणु को आप मानो कोषिका के रूप में। और एक कोषिका नयी पैदा हो जाती है। या टूट जाती है क्षण भंगुरता। तो उन्होंने कहा – सतकोटि करोड़। कोटि तो करोड़ होती है। सहस्त्रकोटि एक करोड़ का हजारवां गुना होवे। एक के ऊपर बारह जीरो लगे। एक सैकण्ड के उतने हिस्से में हमारा क्षणभंगुर जीवन चला जाता है।

जीवन हम ऐसा ही बिताये, दुःख के साझेदार बने।
दर्द की नाव जो ले हिचकोले, मदद की हम पतवार बने।।

सेवा ही धर्म

संत सेरोपियो मिश्र देश के निवासी थे वह बड़े ही परोपकारी थे। दूसरों की सेवा करना उन्हें सुकून देता था। संत हमेशा ही मोटे कपड़ों का चोगा पहनते थे। वह अपनी वेशभूषा को लेकर आम तौर पर बड़े बेफिक्र रहा करते थे। एक दिन उनके चोगे को फटा देखकर एक व्यक्ति ने उनसे कहा आप चोगा नया क्यों नहीं ले लेते?

तब संत ने कहा भाई बात यह है कि मैं मानता हूं एक इंसान को दूसरे इंसान की मदद करनी चाहिए। यही बात सबसे बड़ी है इसी पर ध्यान देना चाहिए। बाकी बातें खास मायने नहीं रखती। अपने शरीर पर ध्यान देने की कोई जरूरत नहीं यह धर्म की सीख है और आदेश भी। तुम वस्त्रों की बात कर रहे हो। जब धर्म शरीर की भी चिंता न करने की सीख देता है ? तो में भला वस्त्र की चिंता क्यों करूं। उस व्यक्ति ने हैरान होकर पूछा धर्म की सीख जरा वह ग्रंथ दिखाइए जिसमें ऐसा आदेश और सीख दी हुई है।

संत सरोपियों बोले मेरे पास नहीं है उसे मैंने बेच दिया है अब उस व्यक्ति को हँसी आ गई। वह बोला पवित्र ग्रंथ भी कहीं बेचे जाते हैं कैसे संत हैं आप जो पवित्र धार्मिक ग्रंथों को भी बेच देते हैं। संत ने कहा जो ग्रंथ दूसरों की सेवा करने के लिए अपनी चीजों को बेचने का उपदेश देता है उसे बेचने में कोई हर्ज नहीं। सबसे महत्वपूर्ण है गरीबों की सेवा। हमारे पास जो भी साधन हो उससे दूसरों की सेवा करें । यही उस ग्रंथ का भी मूलमंत्र था। महत्वपूर्ण ग्रंथ नहीं उसमें दिए गए उपदेश थे। उस ग्रंथ को बेचने पर जो रकम मिली थी उससे मैंने जरूरतमंदों की जरूरतें पूरी की।

सेवा - स्मृति के क्षण

सम्पादकीय

समरसता एक मानसिक भावदशा है। इस भाव के उदय होने पर हरेक व्यक्ति, अपनों सा लगने लगता है। दो या अनेक व्यक्ति विलय न होकर आत्मीय संबंधों से जुड़ जाये, शायद यही समरसता है। समरस होने पर एक दूसरे का सुख–दुःख परस्पर अनुभव होने लगता है। खुशी व गम बाँटने का भाव प्रबल होता है। इसलिये समरसता की सोच स्तुत्य मानी गई है। यों तो समरसता के प्रादुर्भाव के अनेक उपाय होंगे किन्तु सेवा भी समरसता का अनुभूत प्रयोग हैं। हम जब किसी की सेवा के लिये उद्यत होते हैं तो सेवित के प्रति हमारा स्वकीय भाव उमड़ता है। यह स्व की अवधारणा ही समरसता के बीजा का अंकुरण है। जब स्व का भाव आ जाता है तो फिर सेवा क्रिया न रहकर कर्तव्य में परिवर्तित होने लगती है। अब तक के सेवा के इतिहास में कर्तव्य–भाव की सेवा को श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि इससे अहं की सेवा को श्रेष्ठ कहा गया है क्योंकि इससे अहं का भाव जन्म नहीं हो सकता। सेवा द्वारा भी सूक्ष्म अभिमान आ सकता है यदि सेवक न सेवित के मध्य आत्मीय भाव एवं समरसता का समावेश न हो। अतः सच्ची सेवा के अनेक फलों में एक प्रमुख फल समरसता भी है। यह मानवीय भी है और अनुकरणीय भी।

कुछ काव्यमय

सेवा समरसता की जननी,
सेवा 'स्व' का है विस्तार।
सेवा से सेवक सेवित में,
भावों का उपजे संसार।
सेवा बीज, अपनापन अंकुर,
समरसता तरु हो तैयार।
समरस समाज ही दे पाता,
परमानंद ही परम बयार।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

रिश्ते निभायें

जिस प्रकार एक बछड़ा हजारों गायों के बीच में अपनी माँ को पहचान लेता है, उसी प्रकार किए गए कर्म भी कर्त्ता का अनुसरण करते हैं। जब भगवान दुःख देता है तो उसे सहन करने की शक्ति भी देता है। भगवान से ये न कहें कि मुझे दुःख–दर्द मत देना। भगवान से यही प्रार्थना करना कि मैंने जो कर्म किए हैं, उसके लिए जो भी दुःख–तकलीफें लिखी हैं, उन्हें जरूर देना, लेकिन उन सब पीड़ाओं को सहन करने की शक्ति भी जरूर प्रदान करना। भीष्म पितामह जब बाणों की शैय्या पर सोए हुए थे, पूरे बदन में तीर घुसे थे, तो उन्होंने श्रीकृष्ण से पूछा –हे श्रीकृष्ण! मैंने ऐसा कौन–सा अपराध किया है, जिसकी वजह से मेरी स्थिति इतनी दुःखद हो गई है। मेरे शरीर के हर अंग में तीर घुसे हुए हैं, रक्त बह रहा है और मुझे असहनीय वेदना भोगनी पड़ रही है। हे वासुदेव ! मैंने अपने पिछले 100 जन्म देख लिये हैं, मैंने 100 जन्मों में ऐसा कोई गलत कार्य नहीं किया है कि मुझे ऐसी सजा

मिले। श्रीकृष्ण ने कहा– पितामह ! आप अपने 101वें जन्म में जाइए और देखिए। भीष्म पितामह आँखें बंद करते हैं और 101वें जन्म में जाते हैं। वह देखते है कि वे एक देश के राजा हैं और अपने सेनापति और सैनिकों के साथ जंगल में भ्रमण कर रहे हैं। भ्रमण करते–करते एक साँप उनके रास्ते में आ जाता है। सेनापति कहता है कि महाराज ! रास्ते के बीच में साँप मिला हैं। वह सेनापति को आदेश देते हैं कि इस साँप को हमारे पथ से हटा दिया जाए। सेनापति एक तीर से उस साँप को उठा कर झाड़ियों में फेंक देता है। वह साँप कंटीली झाड़ियों में फंस जाता है। उस साँप के शरीर में काँटे घुस जाते हैं और वह साँप तड़प–तड़प कर मृत्यु को प्राप्त होता है। जब ये दृश्य भीष्म पितामह अपने 101वें जन्म में देखते हैं तो कहते हैं कि जो कर्म मैंने किया था, आज मैं उसकी सजा पा रहा हूँ, उसी कर्म को भोग रहा हूँ। हमें हमारे सभी जन्मों के कर्म भोगने पड़ेंगे। अतः हम आज कोई ऐसा कृत्य न करें, जिसका दुष्परिणाम हमें कल भोगना पड़े। भगवान ने किसी का भाग्य नहीं लिखा है। कर्मों ने आपका भाग्य लिखा है। जो कृत्य हम आज कर रहे हैं उसका फल आज नहीं तो कल हमें अवश्य भोगना ही पड़ेगा। अगर आज हमने किसी की सेवा की है तो आने वाले समय में हमारी सेवा में भी कोई जरूर तत्पर होगा। हमेशा कर्म ऐसा करें कि आने वाला कल अच्छा संदेश लेकर आए। वर्तमान को इतना श्रेष्ठ कर लो कि भविष्य में कोई तकलीफ ही न आए। जो भी तकलीफ हमारे जीवन मे आती है, उसके जिम्मेदार हम स्वयं हैं। उसके लिए हम किसी और को दोष न दें।

–कैलाश 'मानव'

जिज्ञासा

जीवन की शुरुआत हमारे रोने से होती है। जीवन में इतना अच्छा काम करो कि हमारे अंत समय में दूसरों को रोना आए।

एक बार बादशाह अकबर ने बीरबल से तीन प्रश्न किये –

1. ईश्वर कहाँ है?
2. वह कैसे मिलता है?
3. वह करता क्या है?

इन प्रश्नों को सुनकर बीरबल असमंजस में पड़ गए कि इसका क्या जवाब दूँ। दूसरे दिन उनको जवाब देना था। उनको उत्तर सूझ नहीं रहा था।

बीरबल घर पहुँचे, उन्होंने परिवार में चर्चा की, तब उनके बेटे ने कहा कि पिताजी मुझे ले चलो, मैं इन तीनों प्रश्नों के उत्तर दूँगा।अगले दिन बीरबल बेटे को लेकर दरबार पहुँचे। अकबर ने दरबार में बीरबल से पूछा –मेरे तीन प्रश्नों का उत्तर

दो, तब बीरबल ने कहा कि मैं क्या, मेरा बेटा भी आपके प्रश्नों का जवाब दे सकता है। अकबर ने कहा– ठीक है, मैं प्रश्न पूछता हूँ –पहला प्रश्न– ईश्वर कहाँ है? बीरबल के पुत्र ने कहा– बादशाह सलामत ! दूध और शक्कर मंगाइये। बादशाह के इशारे पर दरबार में एक गिलास में दूध और शक्कर आ जाती है। बीरबल पुत्र ने कहा–दूध में शक्कर घोल दीजिए। बादशाह वैसा ही करता है, जैसा बीरबल का बेटा कहता है। शक्कर दूध में मिल जाती है। बीरबल पुत्र ने कहा कि अब इसमें शक्कर कहाँ है, जरा ये ढूंढने की कोशिश कीजिए। बादशाह ने कहा कि शक्कर तो नहीं दिख रही है, दूध में पूरी तरह घुल गई है।

बीरबल पुत्र ने कहा– जहाँपनाह ! इसी तरह से परमात्मा भी दिखता नहीं, किंतु वह हर जगह विद्यमान है। केवल हम महसूस कर सकते हैं। यह आपके पहले सवाल का जवाब है। दूसरा प्रश्न – वह कैसे मिलता है? बीरबल पुत्र ने बादशाह अकबर से दही की व्यवस्था करने के लिए कहा। दही आने पर बीरबल पुत्र ने कहा कि जहाँपनाह इसे देखकर बताएँ कि क्या इसमें आपको मक्खन दिख रहा है? बादशाह ने कहा कि वह तो मंथन पर ही दिखेगा। बीरबल पुत्र तपाक से बोला कि महाराज इसी तरह बहुत मंथन, चिंतन और प्रयास करने पर ही ईश्वर की प्राप्ति होती है। अकबर दूसरे प्रश्न से भी संतुष्ट हो जाते हैं।

अब वे तीसरा प्रश्न रखते हैं –ईश्वर करता क्या है? बीरबल पुत्र ने कहा कि इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए आपको मुझे अपना गुरु मानना पड़ेगा। बादशाह ने कहा – ठीक है मान लिया। बीरबल पुत्र तुरंत बोला – गुस्ताखी माफ जहाँपनाह ! आप सिंहासन पर बैठे हैं और मैं यानी आपका गुरु, नीचे खड़ा हूँ। तीसरे प्रश्न का उत्तर जानने के लिए बादशाह बहुत जिज्ञासु थे। वे बिना सोचे–समझे तुरंत अपने सिंहासन से नीचे आ गए और बीरबल पुत्र को गुरु मानने की वजह से सिंहासन पर बिठा दिया। सिंहासन पर बैठते ही बीरबल पुत्र ने कहा कि महाँपनाह ये आपके तीसरे प्रश्न का उत्तर है। ईश्वर यही करता है। वह जब चाहे तब, बादशाह को फकीर और फकीर को बादशाह बना सकता है। आप मुझे देख लें। तीनों ही प्रश्नों के उत्तर जानकर बादशाह अकबर बहुत प्रसन्न हुए। उनकी जिज्ञासा शांत हो गई और उन्होंने इनामो–इकराम के साथ बीरबल पुत्र को विदा किया।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

प्रतापगढ़ की सफलता के बाद बाहर भी ऑपरेशन करने का सिलसिला प्रारम्भ हो गया। नाथद्वारा मण्डल के सहयोग से एक ऑपरेशन शिविर किया। इन्हीं दिनों मुम्बई के एक सेठ कैलाश से मिले। उनकी इच्छा थी कि सिलवासा में ऐसा शिविर लगाया जाये। कैलाश ने हां भर ली। सिलवासा उदयपुर से बहुत दूर था, सारा सामान और व्यवस्थाएं यहां ले जाकर स्थापित करना अत्यन्त दुष्कर था मगर कैलाश को संघर्षो में ही काम करने में मजा आता था। सेठ ने 100 रोगियों के ऑपरेशन की बात की थी मगर 400–500 लोग आ गये। इतने लोगों के लिये उपकरण, दवाएं अन्य साधन–सामान जुटाना संभव नहीं था। कैलाश ने सेठ से मदद मांगी तो उसने साफ इन्कार कर दिया, बोला–इतने तमाम लोगों का ऑपरेशन करो उसके बाद ही यह पैसे देगा।

कैलाश के पास पैसे भी नहीं थे, उसने 100 ऑपरेशन तक की व्यवस्था की थी मगर सेठ एक पैसा तक देने को तैयार नहीं था। मरता क्या न करता, मुम्बई गया, दवाएं, उपकरण व अन्य साधन उधार मांग कर लाया और जैसे तैसे सभी लोगों के ऑपरेशन किये। इस तरह की समस्याएं आये दिन पेश होने लगी। उत्तर प्रदेश के वृन्दावन में शिविर आयोजित करने हेतु वहां के कांच के मन्दिर की संस्था का अनुरोध आया तो वह सभी आवश्यक साधन–संसाधन ले वहां चला गया। वृन्दावन में उस संस्था ने न जाने क्या प्रचार किया कि 6 हजार पोलियो रोगी आ गये। कई तो शिविर की तिथि से 3 दिन पहले ही आकर जम गये। हालत यह हो गई कि जिधर नजर डालो, उधर रोगी ही रोगी नजर आते थे। पैसे कोई भी प्रायोजक एडवान्स में नहीं देता था, यह डर हमेशा सताता रहता था कि शिविर के बाद भी हाथ खड़े कर देंगे तो क्या होगा? रोज सुबह जल्दी शुरू कर दोपहर की डेढ़ बजे तक ऑपरेशन चलते रहते।

अंश - 185

अपनी इम्युनिटी बढ़ाने पर ध्यान दें

भारत समेत दो दर्जन से अधिक देशों में कोरोना के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन के आने से चिकित्सकों सहित सभी लोगों की चिंता बढ़ गई। वैक्सीन के दोनों डोज ले चुके लोगों को बूस्टर डोज लगाने पर भी विचार हो रहा है। बच्चों के वैक्सीनेशन की संभावना भी है। ऐसे में बच्चे, बुजुर्गो और किसी क्रॉनिक बीमारी जैसे डायबिटीज, हार्ट डिजीज, बीपी, आर्थराइटिस आदि से ग्रसित हैं तो उन्हें विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

सावधानी बरतना न छोड़े

कोरोना की दूसरी लहर में हजारों लोगों की जान चली गई, लेकिन जो नियमित मास्क का इस्तेमाल करते थे, हाथों को सैनिटाइज करते और सामाजिक दूरी बनाकर रहते थे, वे अधिक सुरक्षित थे।

जरूरी हो तो ही बाहर निकलें

मामले बढ़ रहे हैं इसलिए बहुत जरूरी हो तो ही घर से बाहर निकलें। सर्दी के मौसम में वैसे भी संक्रमण की आशंका अधिक रहती है। सावधानी बरतें। अगर निकलना पड़े तो पब्लिक ट्रांसपोर्ट के इस्तेमाल से बचें।

इन्हें लेना शुरू करें

- रोज डाइट में 4–5 कलियां लहसुन की लें। लेकिन गैस्ट्रिक के रोगी इसे न लें। अदरक, तुलसी, खट्टे फल लें।
- सप्ताह में 2–3 बार मशरूम लें। इसमें सेलेनियम और एंटीऑक्सीडेट मिलता है। इससे वाइट ब्लड सेल्स सक्रिय होते हैं। इम्युनिटी बढ़ती है।
- आधा चम्मच आंवले का चूर्ण एक चम्मच शहद के साथ सुबह खाली पेट पीने से फायदा होगा। इम्युनिटी बढ़ेगी और पाचन भी सही होगा।
- आधा चम्मच त्रिफला चूर्ण रात में सोने से पहले गुनगुने पानी के साथ लेना चाहिए। रोज च्यवनप्राश खाएं।
- सर्दी व कोरोना से बचाव के लिए रोज नस्य क्रिया करें। नाक में अणु तेल, नारियल तेल , गाय का घी लगाएं।
- गिलोय के दो इंच के टुकड़े को अच्छे से कूट लें और उसका काढ़ा बनाकर पीएं। डायबिटीज रोगी रोज दानामेथी को रात में भिगो दें, सुबह पीएं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

यही होना है आज तक यही हुआ है। तो भाई जी मैंने सारा सामान जमा रखा है। कमरे में भाई जी ने कहा–मैंने कहा हाँ, भाई जी हम सुनते है। कहते हैं। सोचते हैं। शरीर तो जाएगा परन्तु आपने इतना सामान भी जमा दिया। हाँ, महाराज मेरा बेटा 40 साल का हो गया हैं। मैं चाहता हूँ उसको कोई तकलीफ न हो। ताला खोले सब कुछ ले जाए। भैया जी ने कहा है यही तो हम कल्याण में लिखते हैं। सेठ साहब की कलम टंगी रह गई। वकील साहब की कल की पेशी पड़ी रही। वारंट कट गया। जेन्टलमेंन के हाथ की घड़ी हाथ में लगी रही। ठोकर लगी प्राण निकल गए। यही होता है भाई जी ने लिखा।

कल्याण में करीबन 15 महिने बाद फिर कानपुर जाने का संयोग बैठा। मेरे मित्र मिले दाढ़ी बढ़ी हुई। लगा बुढ़ापा डेढ़ साल में 18 महिने में ही 10 साल का आ गया है। लगा जैसे 80 साल के हो गए। गले मिल कर फफक फफक कर रोने लगे। क्यों रोते हो भैया? आप तो पहले बहुत हंसते थे।

अब रोते क्यों हो भैया? भाईजी जो सामग्री मैंने अपने लिए तैयार कर के रखी थी–अंतिम यात्रा की तैयारी की। सारी अर्थी का सामान, मेरा एक मात्र बेटा 42 साल की उम्र में इस नश्वर संसार को छोड़कर विदा हो गया। मेरे शरीर के लिए जो सामग्री रखी थी, उसके काम आ गई। भाईजी ने कहा यही तो होता है। क्यों रोते हो? रोने से क्या होगा?

हानि–लाभ जीवन मरण।
यश अपयश विधि हाथ।।
अच्छा भाई बहुत अच्छा।
हमारे है श्री रघुनाथ,
हमें किस बात की चिंता?
चरण में रख दिया जब माथ,
हमें किस बात की चिंता।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 312 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023